Vidya Bhawan, Balika Vidyapith
Shakti Utthan Ashram, Lakhisarai-811311(Bihar)

Class - 12 | Teacher's name : Partha Sarkar
Subject : Music | Date - 01.09.2021

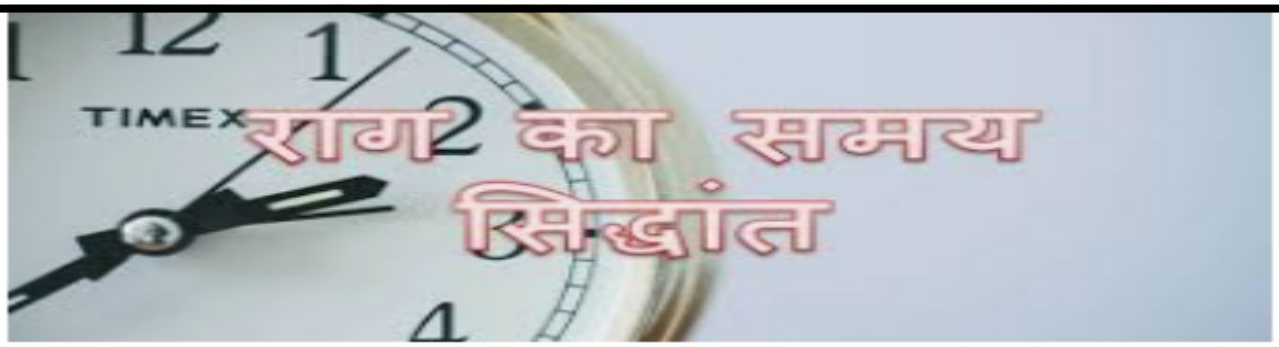

परमेलप्रवेशक राग

भारतीय संगीत की परंपरा में रागों का समय चक्र उसकी एक विशिष्टता के रूप में जाना जाता है। स्वरों की स्थिति, इन रागों के समय निर्धारण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। समस्त रागों को २४ घण्टे के दिवा-चक्र के अंतर्गत, तीन-तीन घण्टों के प्रहर में बाँटा गया है। आधुनिक विद्वानों ने काल को दो भागों में विभाजित किया है। प्राचीनकाल से प्राप्त ब्रह्म-मुहूर्त — प्रात: ४ बजे — से आरम्भ हो संध्या ४ बजे तक, और संध्या ४ बजे से प्रात: ४ बजे तक। प्रथम प्रहर प्रात: ४ बजे से ७ बजे तक, द्वितीय प्रहर ७ बजे से १० बजे तक, तृतीय प्रहर १० से १ बजे तक, और चतुर्थ प्रहर १ से ४ तक माना गया। ठीक यही समय संध्या ४ से ७, ७ से १०, १० से १ व १ से ४ बजे तक का है। पहला प्रहर तो संधिप्रकाश रागों का होता है, चाहे प्रात: का हो या संध्या का। दूसरा प्रहर और तीसरे प्रहर में पहले कोमल व बाद में शुद्ध 'रे ध' स्वर वाले राग का समय निर्धारित किया गया। तत्पश्चात् अंतिम प्रहर में कोमल 'ग नी' वाले राग आते हैं। इन्हीं में कुछ राग ऐसे भी हैं जिनमें एक प्रहर के गुण के साथ साथ दूसरे प्रहर के भी गुण आ जाते हैं। यथा- राग जयजयंती या राग मालगुञ्जी। ये राग शुद्ध 'रे ध' वाले खमाज ठाठ से कोमल 'ग नी' वाले काफी ठाठ में प्रवेश करते हैं अस्तु इन रागों में इन दोनों ही ठाठों के गुण आ जाते हैं। यानि 'रे ध' शुद्ध और दोनो नी का प्रयोग होना खमाज का लक्षण व 'ग नी' कोमल काफी ठाठ का लक्षण, राग जयजयवंती में प्रत्यक्ष ही है। ऐसे रागों को जो एक ठाठ से दूसरे ठाठ में प्रवेश करते हैं 'परमेलप्रवेशक' राग के रूप में जाना जाता हैं।